सत्य एँव अर्थ पूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

# मृत्युंजय ख्रिस्त

लैमेन इवैंजलिक्ल फैलोशिप, नवंबर-दिसम्बर, 2007

## क्रिसमस की महिमा

'और (मरियम) जकरयाह के घर में प्रवेश करके उसने इलीशिबा को नमस्कार किया। ऐसा हुआ के ज्यों ही इलीशिबा ने मरियम का नमस्कार सुना त्यों ही बच्चा उसके गर्भ में उछल पड़ा और इलीशिबा पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हुई। (लूका १:४०, ४१)'

मरियम को यह एहसास होने लगा कि वह कितनी खुश नसीब है। इलीशिबा के घर में मरियम का आना, इलीशिबा का पवित्र आत्मा से भर जाने का कारण बना। जो आत्मा में जीते है, आध्यात्मिक विषयों के प्रति उनकी हमेशा सही प्रतिक्रिया रहती है। मरियम एक ऐसी औरत थी जो सच्चाई पर चलती थी। सत्य, जो वह जानती है। इस दुनिया में महान बनने की कभी उसने अपेक्षा नही की। वह परमेश्वर के मार्गों में आगे बढ़ती गयी। और परमेश्वर ने उस का ध्यान किया।

जो परमेश्वर के वचन का पालन करते है, परमेश्वर को ऐसे लोगों की तलाश है। क्यों कि ऐसे लोगों का ही वह उपयोग कर पाएंगे। जब अंत में, परमेश्वर के वचन का पालन करने की कठिन बारी आयी, तब मरियम ने पूर्ण रूप से परमेश्वर को प्रसन्न किया। परमेश्वर के वचन का पालन सिर्फ दुनिया में महान बनने के लिए, हमें कभी नहीं करना चाहिए। हमें परमेश्वर के वचन का पालन इसलिए करना चाहिए क्यों कि वह अपने आप में ही एक आशिष है।

क्रिसमस ऐसे नवजवानों की कहानी है जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार चले हैं और जीये है।

पृष्ठ २ पर..क्रिसमस की महिमा..

आत्मिक उन्नति केलिए देखना न भूलें

"परमेश्वर की चुनौती'

ETC TV कार्यक्रम

हर शनिवार सुबह 7:00 बजे

## डरो मत, क्यों कि देखो, मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूँ।

'डरो मत, क्यों कि देखो, मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूँ जो सब लोगों के लिए होगा। क्यों कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्ता जन्मा है और यही मसीह प्रभु है।' (लूका २:१०, ११)

'भय' एक ऐसा प्रबल अनुभव है जो सर्वत्र हर एक सामना कर रहा है। आजकल मनुष्यों की जिन्दगी में, भविष्य को लेकर भय, एक प्रमुख अभिलक्षण बन गया है।

अर्थशास्त्री पूर्वानुमान लगा सकते है। एक वक्त पर समर्ध रहे देश आज गहरी कठिनाई में हैं। हर जगह, बेरोजगारों की संख्या बढ़ रही है। वास्तविक कष्ट तो है ही और साथ-साथ काल्पनिक पीड़ाएं भी बहुत है। निजी जरूरत तो है ही और साथ-साथ कुछ ऐशो-विलास जिसको कम करना कुछ लोगों को साफ-साफ ना मंज़ूर है।

समाचार पत्र में शुभ समाचार का कम, एक दुखद सूची ज्यादा लगती है। विपत्तियाँ, उदासीन विध्वंस, असफल उपज, न्यूनतम पैदावार फसल और असीम राजनैतिक अव्यवस्था .... इन दिनों, अगर एक आदमी, आनेवाले कुछ नये महासंकटों के बारे में पढ़े बिना ही समाचार पत्र को नीचे रख दे, तो यहीं एक बहुत बड़ी सुखद बात होगी।

हम दावा करते है कि हम सभ्य दिनों में जी रहें है। मगर हत्याकाण्डो की एक लम्बी सूची, बिना पर्याप्त न्याय विचारण किये ही संक्षिप्त, फंसी लगाना - यह सब एक हिंसक, असभ्य व्यवहार को व्यक्त कर रहे है। ऐसे व्यवहार से शायद ही कोई गुजरा हुआ युग, इतने विस्तृत रूप से दोषी है। आदमी के प्रति आदमी की अमानुषिकता, हमे रोने-सिसकने पर मजबूर करना देनी चाहिए। आज, लाखों ऐसे लोग है जो अपनी देश से बाहर नही जा सकते क्यों कि कई दिवारें और मोर्चाबंदी खड़ी की गई हैं। और वे परमेश्वर द्वारा दी हुई चुनने की आजादी से वंचित है।

ऐसी पाप भरी दुनिया में इस हलचल के बीच, इस एक उद्धारकर्ता के आने के आनन्द का समाचार, हमारे पास आता है। स्वर्गदूतों ने मध्य रात्रि, यह अदभुत सुसमाचार चरवाहों पर प्रकट किया। 'डरो मत, क्यों कि देखो, मैं तुम्हे बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूँ ...' (लूका २:१०) हाँ, मसीह हमारे लिये बड़ा आनन्द ले आये है।

मझे स्मरण है, कि मेरा हृदय कैसे बोझ के नीचे दबा था। और मैं अपनी अशुद्धता और पाप में कैसी भयानक हालत में था। उस रात जब प्रभु यीशु मुझ से मिले, पाप का भारी बोझ मेरे दिल से हट गया। वह कितना मनोहर था। ऐसा लगा मानो मैं हवा में उड़ रहा हूँ। खुशी से गा उठने से मैं अपने आप को रोक नहीं पाया। उस दिन से लेकर आज तक, आनन्द की एक गहरी अन्तर्धारा मुझ में है। सतत यात्रायें, विनिद्र रातें और निरन्तर बढ़ती सेवकाई, इन सब के बीच दिन-प्रतिदिन, यही आनंद मुझे एक नयी शक्ति देता है।

उद्धारकर्ता कहते है, 'यहोवा में आनन्दित रहना ही तुम्हारी सामर्थ्य है' (नहेमायाह ८:१०) प्रभु हमारे दुखों के घने बादल हटाकर, हमारे हृदय आनन्द से भरना चाहते है।

अच्छे मसीही होने का दावा करने वाले लोगों के बीच भी असीम शिकायतें, पक्षपात और यहाँ तक कि लोगों की बुराई करना, यह सब सनुने में आते है। यह एक विस्मित करनेवाली बात है। उनके बीच दस-पन्द्रह मिनट बैठे रहे तो, अच्छे समाचारों के बजाय कान भर, बुरी खबर सुनने को मिलेंगी। मैं कहना चाहता हूँ कि एक मसीही छुटकारे में मूल विषय से तुम पूरी तरह से चूक गये हो। ऐसा उदासपूर्ण नजरिया क्यों? ऐसा नकारत्मक भय क्यों? क्या उद्धारकर्ता नही आये? या क्या वह बाकी नबियों की तरह अब भी कब्र में है। नहीं, हमारा उद्धारकर्ता अमर और पुनः जीवित मुक्तिदाता है।

पृष्ठ २ पर..डरो मत.. पृष्ठ १

पृष्ठ १ से..क्रिसमस की महिमा...

जवान लोग जो परमेश्वर की इच्छा में चलते है, वे इतिहास बनाते है। जकरयाह और इलीशिबा अपने बुढ़ापे में सिद्ध थे। मरियम और इलीशिबा संबंधी थे। ऐसा जान पड़ता है, कि इन रिश्तेदारों में एक उच्च स्तर का विश्वास है। युहन्ना को यीशु को बप्तिस्मा देना था। युहन्ना को ऐसे ही वंश से आना था। जो सिद्धता इलीशिबा और जकरयाह अपने बुढ़ापे में प्राप्त कर पाये, मरियम और यूसुफ उसी सिद्धता पर अपनी जवानी में ही पहुँच गये। परमेश्वर को ऐसे नवजवानों की तलाश है जो किसी भी कीमत पर उनकी आज्ञा मानते है। परमेश्वर ऐसे लोगों पर भरोसा कर सकते हैं।

मनश्शे का जन्म ऐसा समय पर हुआ जब राजा हिजकिय्याह का विश्वास भ्रष्ट हो रहा था। मनश्शे ने राज्य का इस हद तक विध्वंश किया कि कोई भी दुबारा उसे अपनी मूल स्थिति पर पुनः नही ला पाया। मगर ऊपर-उल्लिखित परिवारों ने, विश्वास में उच्च स्तर पर पहुँच पाये। यूसुफ के सपने, मरियम के शब्द कितने नबुवती थे।

मसीहियों के इतिहास में, महान घटनायें तभी घटीं, जब विश्वास एक ऊँचे स्तर पर पहुँचा था। नवजवानों को हमेशा विश्वास का प्रतिफल मिलता है। प्रार्थना करने, साथ इकट्ठा होने से, हम एक दूसरे के विश्वास में बढ़ने की मदद कर रहे है।

पाप और मृत्यु पहली स्त्री द्वारा आये। एक और स्त्री के द्वारा परमेश्वर का पुत्र इस दुनिया में आया। जीवन और शान्ति साथ लाये। मरियम के संरक्षण में यीशु पले-बढ़े। उसने उन्हें परमेश्वर का वचन सिखाया। इलीशिबा ने भी परमेश्वर का वचन सिखाया। जो खुद वह पूर्ण रूप से पालन करती थी। यूसुफ और जकरयाह ने इन स्त्रियों के विश्वास को बल दिया। इन घरों में महान समरस था। जब हम इन परिवारों के बारे में पढ़ते है तो हम किसी नयी दुनिया में पहुँच जाते है।

मरियम, इलीशिबा के घर में तीन महीने रही थी। घर का आध्यात्मिक माहौल पूर्ण रूप से अनुकूल ना हो तो, एक आत्मा से भरी स्त्री ऐसे घर में नहीं रह सकती। इलीशिबा का घर वैसा था। मरियम और इलीशिबा दोनों ने अपने पुत्रों के प्रति अपना कर्तव्य निभाया। युहन्ना सच्चाई और धार्मिकता के लिए एक शहीद बना। वह जंगल मे पला-बढ़ा। परमेश्वर ने इस तरह व्यवस्था की कि युहन्ना के माता-पिता उनकी मृत्यु देखने तक जीवित नही रहें। मगर मरियम, अपने पुत्र का मरण और पुनरुत्थान देखने तक जीवित थी। दुनिया को हिलाने वाला, पिन्तेकुस्त का दिन, पवित्र आत्मा पाने वालों में से वह भी एक थी।

परमेश्वर का विश्वास्यता हमें याद दिलाने, क्रिसमस साल दर साल आता है। और कमजोर मनुष्यों के द्वारा अपनी महान योजनायें सफल करने का परमेश्वर के उद्देश्य को भी याद दिलाता है। हम भी जो कमजोर है, उनकी महिमा के लिए जी सकते है। यह जान लेने मे, परमेश्वर हमारी सहायता करें!

- एन. दानिय्येल

पृष्ठ १ से..डरो मत...

और हमारे लिए निवेदन करते हुए सर्वदा जीवित है।

बाईबल जिसे 'विश्वास' कहती है, परमेश्वर के प्रति वह सक्रीय भरोसा, कई लोगों में बहुत कम है। उनके चारों ओर आसमान टूट पड़ने की अपेक्षा कर, वे निराशा में लिपटे रहते है।

प्रिय पाठक, तुम्हें क्रिसमस के संदेश की आवश्यकता है। तुम अपने शरीर को कमजोर बना रहे हो। अपने भविष्य को अंधियारे से भर रहे हो। प्रेमहीनता, अशुद्धता और नकारात्मक भय अपने ऊपर हावी होने देकर तुम अपनी उपयुक्तता का नाश कर रहे हो। तुम्हे उठाने, प्यार करने, भय और दोष के बादलों से तुम्हें ऊपर उठाने उद्धारकर्ता आये है।

यहोवा में आनन्दित रहना ही हमारा सामर्थ्य बने!

- जोशुआ दानिय्येल।

# बर्फ में पंछी

एक नास्तिक को, उसकी पत्नी ने चर्च में आने का निमन्त्रण दिया। उन्होंने साफ-साफ उससे कहा कि परमेश्वर मनुष्य बने - बाईबल के इस उपदेश पर उन्हें जरा भी विश्वास नही है। 'इसका कोई अर्थ मेरे समझ में नहीं आता', उन्होंने कहा।

सारा परिवार चर्च जाने निकल पड़े। वे चले ही थे कि शीघ्र ही, हिमपात होने लगा। और कुछ ही मिनट बाद हुई धम से लगने की आवाज से वे चकित हो गये। बैठक-कक्ष की खिड़की से उढ़कर धब-धब की आवाज दुबारा आया। जब वह सामने दर्वाजे पर आये तो, उन्होंने दयनीय स्थिति में, बर्फ में लिपटे पंछियों को देखा। बर्फ से पनाह पाने के लिए वे सब खिड़की से अन्दर आने की कोशिश कर रहे थे।

उन्होंने तैय किया कि उन बेबस छोटे प्राणियों की मदद उन्हें करनी चाहिए - और तब वे सोच में पड़ गये कि कैसे वह उनकी सहायता कर पायेंगे। तब उन्हें धान्य के कोठार की याद आयी जहाँ गरमी रहती है। धब-धब करते बर्फ में, वे धान्यागार की ओर चले। दरवाजा खोला और बत्ती को जलाया। मगर पंछी अंदर नही आये। 'आहार उन्हें अंदर ले आयेगा।', उन्होंने सोचा। दुबारा घर के अंदर गये और रोटी के कुछ टुकडों को ले कर आये। कोठार की तरफ बर्फ के ऊपर उन टुकडों को छितराते गये। मगर उनको निराश करती चिड़ियों ने उन टुकडों पर ध्यान नही दिया। और बर्फ में फड़-फड़ाते रहे। उनके पीछे हाथों को हिलाते चल कर कोठार में पहुँचाने की कोशिश की, मगर प्रकाशमय और गरम कोठार में जाने के बजाय, वे सब चारों ओर तितर-बितर हो गये।

'मुझे वे एक अजीब और भयानक प्राणी समझते है', उन्होंने अपने आप से कहा, 'वे मुझ पर विश्वास कर सकते है - यह बात उन पंछियों को समझाने का कोई रास्ता मुझे नही सूझता। काश मैं

पृष्ठ ३ पर..बर्फ में पंछी...

**For More Details Please contact on any of the following Bookstalls**

**ALLAHABAD** : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532-2642872.
**BANSI** : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
**MUMBAI** : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
**NOIDA(Delhi)**: Beautiful Books, Basement, Sharma Market, Atta, Sector-27, NOIDA, Uttar Pradesh Ph.09810776324.
**GANGTOK** : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
**SHILLONG** : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

# अद्वितीय मसीह

यीशु मसीह, परमपिता के सीने से अलग हो कर एक स्त्री की गोद में आये। उन्होंने मानवता को धारण किया ताकि हमको देवत्व प्राप्त हो। वह मनुष्य के पुत्र बने ताकि हम परमेश्वर के पुत्र बन पायें। वे स्वर्ग से आये, जहाँ ना दरियाँ हिमभूत होते या हिम से हवा ठंडी होती और न फूल कभी मुरझाते। डॉक्टर के लिए कभी फोन नही किया जाता। क्यों कि कभी कोई बीमार नही पड़ते। वहाँ अंत्येष्टि प्रबन्धक नही रहते और ना रहते कब्रिस्तान। क्यों कि वहाँ कभी कोई नही मरता।

प्राकृतिक नियम के विपरीत उनका जन्म हुआ। गरीबी मे जिये, गुमनाम पले-बढ़े। बचपन में सिर्फ एक बार सरहद के पार गये। उनके पास ना धन-दौलत थी और ना ही प्रभुता। उन्होंने ना शिक्षा पायी या प्रशिक्षण। उनके रिश्तेदार अविशिष्ट और अप्रभावित थे।

बचपन में एक राजा को चौंका दिया। लडकपन में विद्वानों को उलझन में डाला। पुरुष बनकर प्रकृति के नियम पर राज किया। जल-तरंगों पर चले और समुद्र को निस्तब्ध किया। बिना दवा के बहुसख्यक लोगों को चंगा किया और अपनी सेवा का भुगतान नही माँगा। उन्होंने कभी किसी ग्रंथ की रचना नही की। फिर भी उन सब पुस्तकें जो उनके बारे में लिखी जा सकती हैं - दुनिया के सारे पुस्तकालय भी उन्हें समाविष्ट करने के लिए कम पड़ते। उन्होंने कभी कोई गीत नही लिखा। फिर भी, संसार के सारे संगीतकार मिलकर लिख सके - उससे भी आधिक संख्यक गानों के लिए वह प्रेरणा-विषय प्रस्तुत कर गये।

उन्होंने कभी किसी पाठशाला या विद्यालय की स्थापना नही की। फिर भी उनके जितने विद्यार्थी थे, सब संस्थायें मिलकर भी उसके सामन होने की डींगें नही मार सकते। उन्होंने कभी वैद्यशात्र का अभ्यास नही किया, फिर भी, जितने टूटे शरीरों को डॉक्टरों ने ठीक किया, उस से भी अधिक शोक-संतप्त दिलों को स्वस्थ किया।

उन्होंने कभी किसी फौज का नेतृत्व नही किया। या न ही किसी सैनिक को भर्ती किया और ना ही बन्दूक चलायी। फिर भी किसी अगुवाई में इनके जितने स्वयं-सेवक नही थे - ऐसे सेवक, जो उनके आदेश पर, बिना एक भी गोली चलाए कई विद्रोहियों को अपने शस्त्रों को छोड़ने या आत्म समर्पण कराने में सफल हुए।

खगोल विज्ञान का नक्षत्र वही। भूविज्ञान का चट्टान भी। जन्तु विज्ञान का शेर और मेमना वही। सारे अनबन में सामंजस्य स्थापित करने वाला और सारे रोगों को चंगा करने वाला वही। कई महापुरुष आये और गये, वह फिर भी जीवित है। हेरोद उनको खत्म नही कर पाये; कब्र उनको रख नही पायी।

उन्होंने अपने बैंजनी वस्त्र को एक तरफ रखकर गँवार का वस्त्र पहना। वह अमीर थे; मगर हमारे लिए कंगाल बने। कितने कंगाल? मरियम से पूछो! ज्योतिषियों से पूछो! वे किसी और की चरनी में लेटा। उन्होंने किसी और की नाव में यात्रा करके झील पार किया। किसी और के गधे पर सवारी की। किसी और की कब्र में उन्हें दफनाया गया। सब असफल हुए, मगर वह कभी नही। सदैव सिद्ध एक मात्र सर्वोच्य परमेश्वर - 'दस हजारों में नेक' और 'पूर्ण रूप से वह प्रीति पात्र'। (वह अत्यन्त चाहने योग्य है।)

पृष्ठ २ से..बर्फ में पंछी...

कुछ समय के लिए एक पक्षी बन पाता, तब शायद में उनको सुरक्षित स्थान पर पहुँचा देता।'

उसी क्षण चर्च से क्रिसमस गीतों का मधुर घंटानाद आंरभ हुआ। कुछ लम्हे सुनने के बाद, बर्फ में ही वह घुटनों के बल गिरा और प्रार्थना की, 'अब मुझे समझ में आया है। अब मुझे दिख रहा है कि आपको ऐसे क्यों आना पड़ा जैसे आप आये थे।'

पुराना नियम के समय, परमेश्वर कई तरह से लोगों पर प्रकट होते थे। जैसे इब्राहीम को स्वर्ग-दूतों की तरह, मूसा को जलती हुई झाड़ी से हुए थे। वे परमेश्वर के महिमान्वित रूप से भयभीत हो गये। मगर सदियों बाद, स्वर्ग दूतों ने चरवाहों को प्रकट होकर यह घोषण की, 'क्यों कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्ता जन्मा है और यही मसीह प्रभु है।' (लूका २:११)

हाँ, परमेश्वर मनुष्य बने। ताकी हम परमेश्वर के नजदीक जाने के लिए ना डरे। मसीह का जन्म - एक अनन्त परमेश्वर को ससीमित मनुष्य के पहुँच में लाया।' और वचन, जो देहधारी हुआ, और हमारे बीच में निवास किया।' (यूहन्ना १:१४)

## प्रभु यीशु के बोल

**प्रभु का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है। उसने मुझे भेजा है कि में बन्दियों को छुटकारे का और अंधों को दृष्टि पाने का संदेश दूं और दलितों को छुड़ाऊं, और प्रभु के अनुग्रह के समय की उद्घोषणा करूं। लूका (४:१८,१९)**

**चोर केवल चोरी करने, मार डालने, और नाश करने को आता है। मैं इसलिए आया हूं कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं। यूहन्ना (१०:१०)**

**यीशु ने फिर लोगों से कहा, जगत की ज्योति मैं हूँ। जो मेरे पीछे हो लेगा वह अंधकार में न चलेगा, वरन् जीवन की ज्योति पाएगा। यूहन्ना (८:१२)**

## सत्य की परख!

**तब स्वर्गदूत ने उनसे कहा, 'डरो मत, क्यों कि देखो, मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूँ जो सब लोगों के लिए होगा। क्यों कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्ता जन्मा है और यही मसीह प्रभु है।' (लूका २:१०, ११)**

# अपने वचन से बढ़कर परमेश्वर

इग्लैण्ड में, योर्कशायर जिले के अंतरर्गत सौ ग्रामों में से एक बड़ा और घनी आबादी वाला एक गाँव था। वहाँ का रहनेवाला जोनाथन, एक गरीब मगर ईमानदार और धर्मनिष्ठ आदमी था। वह अस्वस्थ और पक्षाघात से पीड़ित आदमी था। उनकी पत्नी और दो या तीन बच्चे थे। और उनकी छोटी सी कमाई, उन सब के जीवन का मुख्य आधार थी। जोनाथन अपना और परिवार का गुजारा करने में बहुत ही सहनशील, मेहनती और अपनी कोशिशों में उद्यामी था। सब अपने साधारण जीवन से संतुष्ट थे। इस वृतांत के लेखक का उन से परिचय था, तब वह चालीस या पचास बरस का होगा। उनका बताया हुआ, अपनी जिन्दगी के कुछ घटनाओं मे से निम्न लिखित अनुभव, मुझे बहुत ही स्पष्ट रूप से याद है।

फसल की कटाई का समय था। दानों को इकट्ठा करने का काम करते समय, अचानक वह जौ के गर्री के ऊपर से फिसल गया। और उनके एक या दोनों टखने मुड़ गये। फलस्वरूप कुछ हफ्ते उन्हें अपने बिस्तर और अपना कमरे तक ही सीमित होना पड़ा। यह कहना भी अनावश्यक है कि उस दौरान सप्ताहिक श्रम और कमाई के अभाव को, उनका परिवार महसूस किया होंगा।

एक अवसर पर, उनकी पत्नी, ऊपरी मंजिल में उनके कमरे में रोती हुई गयी। 'क्या बात है?' जोनाथन ने पूछा, 'किस बात से दुखी हो?' 'क्यों, बच्चें खाना के लिए रो रहे हैं, और उनको देने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं,' यह था प्रभावात्मक जवाब। 'परमेश्वर पर क्या तुम्हारा विश्वास है?' जोनतन ने पूछा। 'परमेश्वर का विधान और उनके वचन पर, क्या तुम्हें विश्वास है? क्या उन्होंने नही कहा, 'उसको उसकी रोटी मिलती रहेगी, और उसे पानी की घटी कभी न होगी?' (यशायाह ३३:१६) 'बिस्तर के बगल में घुटने टेको', उन्होंने आगे कहा, 'और परमेश्वर से प्रार्थना करो। अपने बच्चों की कैसी स्थिति है उनको बताओ कि उनको खाने के लिए रोटी नही है; और कुछ खरीदने के लिए तुम्हारे पास कुछ भी नही; मैं भी प्रार्थना करता हूँ। परमेश्वर क्या करेंगे, क्या कोई बता सकता है? वह प्रार्थना सुनते है।'

जोनाथन और उनकी पत्नी दोनों ने मिलकर अपने पूरे हृदय से प्रार्थना की। उन्होंने परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का दावा किया, और उनके उत्तर पाने की प्रतीक्षा की। जल्दी ही, एक व्यक्ति रोटी लेकर दरवाजे पर आया। जोनाथन के निकटस्थ पड़ोस में एक घर से वह महिला आयी। उस घर में रहनेवाले लोग, कई शाखाओं वाले लोह व्यापार में, उस गाँव में चलने वाली शाखा के मालिक थे।

रोटी पाने के तुरन्त बाद ही, वह जोनाथन के पास दोड़ती गयी, यह बताने कि परमेश्वर ने उनकी प्रार्थना का कैसे उत्तर दिया। 'अब', जोनतन ने कहा, 'कुछ भी करने से पहले, बिस्तर के बगल में घुटने टेक कर, हमारी प्रार्थना सुनने के लिए परमेश्वर को दुबारा धन्यवाद दें।' उसने ऐसा ही किया। दोनों ने मिलकर उनके नाम की स्तुति की, तब एक मन और प्रसन्नता से सब ने मिलकर भोजन किया।

कुछ ही घटों बाद, परमेश्वर के विधान और उनके हस्तक्षेप का विवरण उनके सामने आया। एक और ने उनके लिए मांस का खंड लाकर दिया। जोनाथन को जब उस के बारे में बताया गया, उन्होंने अपनी पत्नी से कहा, 'ओह! देखो! परमेश्वर, अपने वचन से भी बढ़कर है। उन्होंने रोटी का वादा किया, और उसके अतिरिक्त उन्होंने मांस भी भेजा। दुबारा घुटने टेक कर उनको धन्यवाद दो।'

परमेश्वर के हस्तक्षेप में कोई ढीला धागा नही, परमेश्वर संयोग के आधार पर किसी घटना को छोड़ते नही। विश्व की महान घड़ी समयबद्ध है और 'परमेश्वर के विधान' का पूरा यंत्रागं, अत्रुटिपूर्ण, समय निष्ठता से चलता रहेगा।

# प्रभु यीशु के बोल

**क्योकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, कि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा कि जगत को दोषी ठहराए, परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। जो उस पर विश्वास करता है वह दोषी नहीं ठहराया जाता। जो विश्वास नहीं करता वह दोषी ठहराया जा चुका है, क्योंकि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। और दोष यह है, कि ज्योति जगत में आ चुकी है, परन्तु मनुष्यों ने ज्योति की अपेक्षा अंधकार को अधिक प्रिय जाना, क्योंकि उनके कार्य बुरे थे। क्योंकि प्रत्येक जो बुराई करता है, ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के पास नहीं आता कि कहीं उसके कार्य प्रकट न हो जाएं। परन्तु वह जो सत्य पर चलता है ज्योति के पास आता है, जिस से यह प्रकट हो जाए कि उसके कार्य परमेश्वर की ओर से किए गए हैं। यूहन्ना (३:१६-२१)**



कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दीजिए।